क्रम एवं अक्रम विज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

क्रम का अर्थ है– क्रमशः धीरे–धीरे आगे बढ़ना। अक्रम का अर्थ है– क्रमशः न चलकर एक छलांग में ऊंची उड़ान भरकर लक्ष्य को प्राप्त कर लेना। क्रम और अक्रम का अपना एक विज्ञान है। इस सिद्धांत को दादा भगवान ने अपने आत्म साधना के उपरान्त समाज को दिया है। आत्मारोहण करते हुए जीव मोक्ष को प्राप्त करता है। इसकी अपनी एक वैज्ञानिक पद्धति है। अक्रम विज्ञान में जीव डायरेक्ट अंतिम सीढ़ी से उच्च सीढ़ी तक पहुंच जाता है। अक्रम विज्ञान दादा भगवान का दिया गया सिद्धांत है। उन्होंने साधना के द्वारा यह देखा कि आत्मा क्षणभर में मुक्त हो सकता है। अक्रम विज्ञान आचार मीमांसा है। इसका अपना पूरा दर्शन है। भेदविज्ञान में शरीर और आत्मा को पृथक देखा जाता है। इसमें अपने भीतर शुद्ध आत्मा का दर्शन होता है।

दादा भगवान ने इसी भव में आत्मदर्शन करके इस सिद्धांत को दिया है। आधुनिक काल में अनेक ज्ञानी पुरुष हुए हैं जो इस जगत मीमांसा पर दृष्टि डाले हैं। ऐसे ही मनस्वी पुरुषों में दादा भगवान भी एक प्रमुख चिंतक रहे हैं। दादा भगवान के बचपन का नाम अंबालाल पटेल था। अंबालालजी गुजरात के एक प्रमुख रियलस्टेट के कारोबारी थे। भौतिक सुख संपन्नता की कोई कमी नहीं थी। धीरे–धीरे यह सुख–सम्पन्नता उन्हें मिथ्या प्रतीत होने लगी। उन्होंने इस सब का त्याग कर वास्तविक सुख–सम्पन्नता की ओर मुख मोड़ा। यह वास्तविक सुख–सम्पन्नता आत्म ज्ञान था। 1958 में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पूर्व भी वह सत्संग किया करते थे। 1935 से वो सत्संग किया करते थे। जब उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ तो उन्होंने किसी से बताया नहीं। परन्तु उनमें एक विशेष परिवर्तन उनमें दिखायी देने लगा। दादा भगवान नाम पड़ने का कारण यह है कि बच्चे उन्हें प्रेम से दादा बुलाते थे। वे नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें भगवान कहे।

दादा भगवान का मानना था कि भगवान तो हमारे अन्दर विराजते हैं। उन्हीं को जानना, समझना और उन्हीं पर विश्वास करना सच्चा ज्ञान है। आत्मा की शक्ति ही प्रत्यक्ष भक्ति है। धीरे–धीरे उन्हें भेद विज्ञान का ज्ञान हुआ। भेद–विज्ञान का ज्ञान होने पर उन्होंने अपने प्रवचन के माध्यम से लोगों को इससे परिचित कराया। उनके अनुसार पांच आज्ञाएं हैं। पहली आज्ञा है कि निश्चय दृष्टि से मैं शुद्ध आत्मा हूं। शुद्ध आत्मा से तात्पर्य ऐसी आत्मा से है जहां शरीर और आत्मा का पार्थक्य रहता है। आत्मा शुद्ध, बुद्ध और मुक्त है। दूसरी दृष्टि व्यवहार दृष्टि है। व्यवहार दृष्टि से आत्मा शरीर युक्त है। जैसे मैं सोहनराज तातेड़ हूं। व्यवहारिक दृष्टि से आत्मा शरीरबद्ध है और प्रति शरीर नियत है। नाम से ही व्यक्ति की पहचान होती है, किन्तु निश्चय दृष्टि से आत्मा एक है।

तीसरी आज्ञा है जगत को चलाने वाला व्यवस्थित चेतन शक्ति है। यह चेतन शक्ति ही जगत का संचालन कर रही है। कोई ईश्वर या बाह्य शक्ति नहीं है। मैं केवल निमित्त हूं। चौथी आज्ञा समभाव पूर्वक निपटारा करना। एक आदमी के परिवार में अनेक लोग होते हैं। परिवार मिलकर समाज बनता है। समाज से राज्य और राष्ट्र का निर्माण होता है। सबका अपना–अपना हिस्सा है। जिसके हिस्से में जो है वह उसको मिलना चाहिए। हिस्सेदारी सबकी बराबर है। इस देश में जितने भी लोग है सब राष्ट्र निर्माण में लगे। राष्ट्र निर्माण में उनकी भी उन्नति है।

पांचवी आज्ञा शुद्ध आत्मा का ज्ञान होना। शुद्ध आत्मा शुद्ध, बुद्ध, मुक्त है। क्रम और अक्रम विज्ञान का संबंध आत्मा से है। क्रम विज्ञान का संबंध सीढ़ी के माध्यम से ऊपर चढ़ना है। यह सिद्धांत आत्मारोहण का क्रमिक विकास है। अक्रम विज्ञान का संबंध लिफ्ट के माध्यम से ऊपर चढ़ना है। इसमें आत्मा एक ही बार में मोक्ष में पहुंच जाता है। आत्मा में अनन्त शक्ति है। इस अनन्त शक्ति को जाग्रत करना है। शक्ति के जागरण से सुख दुःख की अनुभूति नहीं होती। व्यवहारिक स्तर पर सुख दुःख जीव को सताते हैं। सबका सुख–दुःख अलग–अलग है। जब प्राणी माया मोह से ग्रस्त रहता है तो उसे अनेक प्रकार की कष्टानुभूति होती है। माया का जाल बड़ा विचित्र है। यह संबंध मिथ्या है। जो राग–द्वेष का निर्माण करता है। किसी के प्रति आसक्ति होना राग है। इसलिए इस संसार में आसक्ति नहीं करनी चाहिए। यह राग जितना

प्रबल होता है दुःख उतना अधिक होता है। प्रिय से वियोग और अप्रिय की प्राप्ति होने पर आदमी को दुःख होता है। बड़े–बड़े दार्शनिक और मनीषी पुरुष भी इस बंधन में फंस जाते है और दुःख की अनुभूति करते हैं। जहां तक हो सके राग–द्वेष से बचने का प्रयास करना चाहिए।

भारत के सभी तत्व चिंतको का उद्‌देश्य रहा है कि मानव के तीनों योग पवित्र से पवित्र परिणति पाते रहे। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। योगत्रय के पवित्रीकरण में तत्वत्रय या रत्नत्रय की उपयोगिता और सार्थकता तभी सम्भव है जब जीवन से जुड़े हुए विविध व्यवहार और वस्तुओं के प्रति हम अपनी सम्यक् अवधारणा बनाये। मनुष्य में कर्त्ता भाव नहीं होना चाहिए। अक्रम विज्ञान का ज्ञान होने से कर्त्ता भाव समाप्त हो जाता है। क्रम और अक्रम विज्ञान का संबंध आत्मारोहण से है।